आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2018-2020

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2199 • उदयपुर, गुरुवार 31 दिसम्बर, 2020 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

नौसेना को मजबूत बनाएंगा 'एमएच-60 रोमियों'

अमरीकी कंपनी लॉकहीड मार्टिन ने शुक्रवार को भारतीय नौसेना के लिए तैयार किए जा रहे एमएच–60 रोमियों मल्टी रोल हेलिकॉप्टर की पहली तस्वीर साझा की। अमरीकी सरकार के साथ हुए सौदे के तहत भारत ने 24 हेलिकॉप्टर की खरीद का ऑर्डर दिया था। एमएच–60 रोमियों सीहॉक हेलिकॉप्टर पानी की गहराई में पनडुब्बी से लेकर पानी की सतह पर मौजूद पोत पर अचूक निशाना साधकर उन्हें तबाह कर सकता है। यह हेलिकॉप्टर अमरीकी नौसेना में एंटी – सबमरीन और एंटी – सरफेस वेपन के रूप में तैनात है।

अंतरिक्ष का अध्ययन करने बस्तर की बेटी जाएगी चिली

छत्तीसगढ़ के कोंडागांव जिले की निवासी नित्या पांडे ग्रहों में जीवन की उत्पत्ति व रहस्य के विज्ञान (प्लेनेटरी साइंस) विषय में पीएचडी करने मार्च 2021 में दक्षिणी अमेरिकी देश चिली जाएंगी। उनका चयन यूनिवर्सिटी ऑफ चिली में हुआ है। नित्या छात्र जीवन में शुरू से ही मेधावी रही हैं। नित्या ने आदिवासी बहुल नक्सल प्रभारी क्षेत्र कोंडागांव के पीजी कॉलेज से बीएससी और पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय से वर्ष 2018 में एस्ट्रोफिजिक्स में एमएससी की है। वह इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस बेंगलुरु और आर्यभट रिसर्च इंस्टीट्यूट आफ आब्जर्वेशनल साइंसेज नैनींताल में अध्ययन के बाद फ्रांस की इंटरनेशनल स्पेस यूनिवर्सिटी में भी कल्पना चावला स्कारशिप के तहत अध्ययन कर चुकी हैं।

कल्पना चावला को आदर्श मानती हैं नित्या पांडे

कोरोना के कारण कोंडागांव से ही अपने काम में जुटी नित्या पांडे। कल्पना चावला को आदर्श मानने वाली नित्या के पिता बीपी पांडे स्थानीय महात्मा गांधी वार्ड स्थिति स्कूल में प्रधानपाठक हैं। नित्या की स्कूली शिक्षा बनिया गांव के सरकारी स्कूल व सरस्वती शिशु मंदिर कोंडागांव में हुई हैं।

आपदा के दौरान स्वदेशी ईआरएस तुरंत करेगा बिजली आपूर्ति

देश में प्राकृतिक आपदाओं के दौरान ट्रांसमिशन लाइन टॉवरों के गिरने के तुरंत बाद आपातकालीन रिट्रीवल सिस्टम (ईआरएस) से बिजली बहाल की जा सकेगी। इससे चक्रवात, भूकंप या मानव निर्मित व्यवधानों के दौरान मुश्किल में फंसे लोगों को तत्काल राहत पहुंचाई जा सकेगी। आत्मनिर्भर भारत के तहत चेन्नई स्थित सीएसआइआर–एसईआरसी के वैज्ञानिकों की बड़ी खोज है। अभी तक इस सिस्टम को विदेशों से महंगे दामों पर खरीदा जाता था।

सेवा पथ पर आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सोनू देवी बंजारा (35) के परिवार में कुल 5 सदस्य हैं। पति की दो वर्ष पूर्व लीवर की खराबी से मौत हो चुकी थी। तब से सोनू ही सास, अपना और चार बच्चों का मजदूरी कर पेट पाल रही थी। सासू माँ बुजुर्ग हैं और चल नहीं पाती उनकी तबीयत बिगड़ने पर मजदूरी छोड़नी भी पड़ती थी। बच्चों को सिवाय दो वक्त की रोटी देने के और कुछ नहीं कर पाती थी लेकिन, उन्हें अच्छा भविष्य देने के लिए सरकारी स्कूल में जरूर भेजती है। जहाँ फीस नहीं देनी पड़ती और मिड डे मील भी मिल जाता है। सोनू ने बताया कि कोरोना महामारी से पहले गृहस्थी की गाड़ी ठीक से न सही पर चल तो रही थी।

किन्तु लॉकडाउन के बाद मजदूरी हाथ से निकलते ही, गाड़ी डगमग हो गई, जिसे समय पर आकर नारायण सेवा संस्थान ने संभाल लिया। उसकी ओर से न केवल शुरू में भोजन की घर बैठे सेवा मिली, उसके बाद हर माह पर्याप्त राशन मिला। मजदूरी जाने का मलाल जाता रहा, बच्चों व बूढ़ी सास को समय पर भोजन देकर आज मैं खुश हूँ। नौकरी की फिर से तलाश है, भगवान नारायण सेवा का भला करे।

वृद्ध और पोतों को मिला सम्बल

उदयपुर जिले के आदिवासी क्षेत्र चारों का फलां निवासी मेघा (60) वृद्धावस्था में पत्नी के संग जीवन की गाड़ी खींच रहे थे। इकलौता बेटा अलग रहता था करीब 9 माह पूर्व बेटे की पत्नी अपने तीन मासूम बच्चों को छोड़कर अन्यत्र चली गई। अब वृद्धा दादा – दादी पर गृहस्थी की जिम्मेदारी आ पड़ी । लॉकडाउन में बेटे की मजदूरी छूट गई और मदिरापान की उसकी लत के चलते परिवार भूखमरी के मुहाने पर जा खड़ा हुआ, जहां ईश्वर के अलावा कोई दूसरा मददगार नजर नहीं आ रहा था।

ऐसे में एक दिन नारायण सेवा संस्थान की टीम गांव में गरीबों को राशन की मदद पहुंचाने के ध्येय से पहुंची तो स्थानीय लोगों में वृद्ध मेघा और तीन पोतों के उनसे मिलवाया । उनकी विकट स्थिति देखकर संस्थान में हर माह राशन सामग्री देने का फैसला लिया। नन्हें नन्हें बच्चों को वस्त्र एवं पोषाहार भी दिया गया।

मेघा ने कहा कि बुढापें में पड़ोसियों और नारायण सेवा संस्थान ने मदद करके परिवार को काल के मुंह से निकाल लिया, मैं दिल से उनके लिए दुआ करता हूँ।

कमलेश की दुनिया बदली

बदन सेरेब्रल पाल्सी की गिरफ्त में, मुड़े हुए पैरों को पीछे खींचते हुए। और वो आगे चलने कि कोशिश करता है। यहां तक की वो अपनी बात भी ठीक से नहीं कह पाता था। जन्म देते ही मां चल बसी। मजबूरियों भरी शक्ल का नाम था, कमलेश।

बिन माँ के कमलेश ने इतने साल ऐसे ही बिताये। लोगों की उपेक्षा और ताने जब अन्दर तक तोड़ देते तो माँ याद आती। दर्द आँसू बनकर बहता तो कभी प्रार्थना बनकर।

यह बहुत परेशान था चलने में स्कूल जाने में सारी प्राब्लम थी इसको पढ़ने में। परेशान हो रहा था। मैं इसको देखकर के कहता था कमलेश तेरे को परेशान होने की जरूरत नहीं है। यह उसके नाना कहते है। जब पूरी दुनिया ने उसे कहा ना तो नाना के बाजुओं ने उसे सम्भाल लिया। बेजुबान प्रार्थना की आवाजें ईश्वर तक पहुँची तो साथ मिला नारायण सेवा संस्थान का। जो सहारा है ऐसे ही तमाम दीन – दुखियों का।

संस्थान ने कमलेश की जिदंगी को पूरी तरह बदल दिया। बोझ बन चुकी जिन्दगी ने करवट ली। और उम्मीदें आवाज देने लगी।

कम्प्युटर का कोर्स किया नारायण सेवा संस्थान में। अब कुछ काम कर लेता है। संस्थान की कोशिशे रंग लाई। और कमलेश पूरी तरह आत्मनिर्भर हो गया।

परिवार में खुशियाँ लौट आयी। अब वो कमाता और वो अपने सपने में और रंग भरने की कोशिश करता। हमेशा इस आभार के साथ कि नारायण सेवा संस्थान ने उसे जीना सिखाया। तकलीफों से दूर, हंसती, मुसकराती

कूड़ा अंदर हो या बाहर, हटाना जरुरी

'प्लॉगमैन ऑफ इंडिया' कहे जाने वाले रिपुदमन बेविल कहते हैं यह 2017 की बात है, मैं अपने शहर दिल्ली के एक कैफे में बैठा अखबार पढ़ रहा था। एक खबर पर नजर गई, जिसमें बताया गया था कि शहर में एक रेस के आयोजन के तीन दिनों बाद तक सड़क पर प्लास्टिक की बोतलों जैसा कचरा अटा पड़ा है। मैंने अपने दोस्तों के साथ उस सड़क पर जोगिंग करते हुए सारा कचरा उठा डाला। इस तरह प्लॉगिंग की शुरुआत हुई। प्लॉगिंग एक स्वीडिश टर्म है जो जोगिंग के साथ सड़क से कूड़ा बीनने से जुड़ा हुआ है। फिर यह हमारी आदत बन गया बल्कि मेरे साथ पूरा कारवां जुड़ गया है।

पहल खुद करनी होगी– मैं मानता हूं कि काम कोई भी हो, पहल आपको करनी होती है। आप हर बात के लिए सिस्टम को दोषी नहीं ठहरा सकते। आप यह उम्मीद नहीं कर सकते कि मसीहा आएगा और आपके मसलों को हल करेगा। आपको समस्या का हिस्सा बने रहने की बजाय आगे बढ़कर समस्या को सुलझाने की ओर कदम बढ़ाना पड़ता है।

प्लास्टिक उपवास करें – हम लोगों से प्लास्टिक उपवास को भी कहते हैं यानी एक दिन के लिए प्लास्टिक या सिंगल यूज चीजों का कम से कम उपयोग कीजिए और फिर धीरे–धीरे इसे अपनी आदत बना लीजिए। दूसरी तरफ कहीं कूड़ा दिखता है तो उसे कूड़ेदान में डालिए, कम से कम खुद कूड़ा मत फैलाइए। कूड़े की जगह डस्टबिन में है।

फुर्ती देखकर फौजी ने कहा- एवरेस्ट चढ़ो, नर्स ने चोटी पर फहराया तिरंगा

पेशे से स्टाफ नर्स आशा जुलाई 2015 को अपनी सहेली के साथ अमरनाथ यात्रा पर निकली तो यात्रा के दौरान उनकी फुर्ती और जुनून देखकर एक फौजी ने हौसला बढ़ाया। उसी फौजी से ने उनको एवरेस्ट का सफर करने की सलाह दी। बतौर आशा, उन्होंने घर आकर इंटरनेट पर एवरेस्ट से जुड़ी जानकारी व सफर प्रक्रिया जानी।

मई–जून 2016 में 28 दिन का दार्जीलिंग (पश्चिम बंगाल) से बेसिक कोर्स किया। बेसिक के बाद एडवांस माउंटनियरिंग में वह एकमात्र लड़की थी।

ट्रेनिंग के बाद आशा ने 8 अप्रेल 2017 में एवरेष्ट का सफर शुरू किया। 16 अप्रेल 2017 को वह एवरेष्ट बेस कैंप पहुंची। यहां से उनको चीन की तरफ से चढ़ाई करनी थी। यहीं से उनका सफर जोखिम भरा सफर शुरू हुआ।

आशा ने कठिन परिस्थिति और खराब मौसम के बावजूद हिम्मत नहीं हारी। 22 मई 2017 की सुबह 4.05 बजे एवरेस्ट की चोटी पर तिरंगा फहराया। आशा फिलहाल अलवर जिले की जाटूवास पीएचसी में स्टाफ नर्स पर पद पर कार्यरत है।

ससुराल हरियाणा के बलाहा खुर्द (महेंद्रगढ़) में है। आशा को परिवार का पूरा सहयोग मिला। वह बताती है कि, पति अजयसिंह ताखर, बेटी प्रेरणा, बेटा तन्मय व माँ सावित्रि देवी ने उन्हें पूरा समर्थन किया और एवरेस्ट फतह में उनका भी योगदान है।

छूकर ही लौटूंगी चोटी

रास्ते में शव देखकर और फिर साथी आंखों के सामने हुई मौत ने थोड़ी हिम्मत पस्त कर दी। लेकिन फिर सोचा कि जब यहां तक आ गई तो चोटी छू कर ही लौटूंगी।

बेटियाँ किसी से कम नहीं होती हैं वे चाहें तो लक्ष्य बनाकर हर सफलता हासिल कर सकती हैं। क्योंकि किसी भी जीत के लिए लक्ष्य निर्धारित करना जरूरी होता है। जोश, जज्बे, जुनून और कठिन मेहनत पर हर सफलता टिकी होती है। बस आपको हिम्मत नहीं हारनी है।

सेवा का यह काम आपके सहयोग के बिना कैसे होगा सम्भव

NARAYAN HOSPITALS

पंगुता जिन्दगी जी रहे दिव्यांग भाई बहिनों को अपने पाँवों पर चलाने के लिए कृपया करें सहयोग

ऑपरेशन	सहयोग राशि (रुपये)	ऑपरेशन	सहयोग राशि (रुपये)
501	1700000	40	151000
401	1401000	13	52500
301	1051000	05	21000
201	711000	03	13000
101	361000	01	5000

NARAYAN LIMBS & CALIPERS

रेंग रेंग कर चलने वाले दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों का सहयोग देकर बनायें सशक्त

सहायक उपकरण विवरण	सहयोग राशि (रुपये)
कृत्रिम अंग	10000
ट्राई साईकिल	5000
व्हील चेयर	4000
कैलिपर	2000
बैसाखी	500

NARAYAN VOCATIONAL ACADEMY

दिव्यांगों को स्वावलम्बी बनाने के लिए संस्थान द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षणों में आपका अनुदान हो

मोबाईल / कम्प्यूटर / सिलाई / मेहन्दी प्रशिक्षण योजना राशि	
30 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 225000 रू.	5 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 37500 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 150000 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 22500 रू.
10 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 75000 रू.	1 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 7500 रू.

दान सहयोग हेतु सम्पर्क करें - 0294-6622222, 7023509999

NARAYAN PARA SPORTS ACADEMY

प्रतिभावान दिव्यांग बन्धुओं को खेल प्रशिक्षण देने तथा खेल अकादमी स्थापित करने के लिए कृपया करें मदद

निर्माण सहयोगी बनें	51000 रू.

NARAYAN ROTI

प्यासे को पानी, भूखे को भोजन, बीमार को दवा, यही है नारायण सेवा- कृपया करें भोजन सेवा

विवरण (प्रतिदिन)	सहयोग राशि (रुपये)
नाश्ता, दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	37000
दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	30000
दोपहर अथवा रात का भोजन सहयोग	15000
केवल नाश्ता सहयोग	7000

वर्ष में एक दिन 151 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन सहयोग

NARAYAN EDUCATION ACADEMY

कृपया शिक्षा का दान देकर गरीब बच्चों का करें उद्धार

प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति वर्ष)	36000 रू.
प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति माह)	3000 रू.

NARAYAN APNA GHAR

जिनका कोई नहीं है इस दुनिया में.... ऐसे अनाथ बच्चों को ले गोद और उनकी शिक्षा में करें मदद

प्रति बालक (18 वर्ष तक) सहयोग	100000 रू.

NARAYAN COMMUNITY SEVA

दूरस्थ एवं आदिवासी क्षेत्रों में संस्थान की ओर से चलाई जा रही राशन वितरण, वस्त्र एवं पोषाहार सेवा में मदद करें

50 मजदूर परिवार	100000 रू.
25 मजदूर परिवार	50000 रू.
5 मजदूर परिवार	10000 रू.
3 मजदूर परिवार	6000 रू.
1 मजदूर परिवार	2000 रू.

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

समाज में हेय दृष्टी से देखे जाने वाले दिव्यांग बन्धुंओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए हम कृतसंकल्परत है कृपया सामाजिक सेवा में आप भी हमारे साथ आये।

प्रशांत अग्रवाल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्पादकीय

खुशियां मन के पुलक की अभिव्यक्ति होती हैं। जब हमारा मन पुलकित होता है तो वह प्रसन्नता के माध्यम से अपने को व्यक्त करता है। खुशी के समय चिंता, शोक, उदासी, भय आदि निषेधात्मक भावों का सर्वथा लोप हो जाता है। इन निषेधी विचारों की अनुपस्थिति ही सदमन का निर्माण करती है। अतः खुशी में झूमता मनुष्य प्रकृति व परमात्मा के सन्निकट होता है। खुशियां अंतस में उपजती है लेकिन कारण बाहरी भी हो सकते हैं। सामान्यतः मनवांछित वस्तु प्राप्त होने, मनचाहा कार्य होने या अनायास सफलता की प्राप्ति से खुशी छलक उठती है। इस समय व्यक्ति में उदारता का समावेश हो जाता है। तथा वह द्वेषरहित भावों में जीने लगता है, अतः खुशी एक प्रकार से भगवत्ता का ही प्रतिबिम्ब है। मानव जब खुश होता है तो वह देने को तत्पर होता है। वह खुशियों के लिए सबकुछ लुटा देना चाहता है, वह मानवता की शिखर सोच में जीने लगता है। अतः खुशी को मनुष्य का उत्थान भी कहा जा सकता है। व्यर्थ की चिंता त्यागें, खुश रहें।

कुछ काव्यमय

स्वारथ परमारथ बने,
हो यह पूरी साध।
जीवन सद्गति पा सके,
तभी चले निर्बाध।।
ईश्वर ने हमको दिया,
नर तन बड़ा अमोल।
सद्कर्मों की गंध को,
दें दुनियां में घोल।।
यह तन साधन धर्म का,
कर लें स्व कल्याण।
चेतें या सोतें रहें,
नहीं रुकेंगे प्राण।।
शरीर शुचिता खूब की,
मन भी करलें शुद्ध।
तभी और केवल तभी,
बन पायेंगे बुद्ध।।
मन के भीतर शुद्धता,
तभी मिले भगवान।
परमारथ भी है सधे,
मुक्ति भी आसान।।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

पाप–पुण्य

एक बार कागज का एक टुकड़ा हवा के वेग से उड़ा और पर्वत के शिखर पर जा पहुंचा। यहां कैसे पधारे? कागज ने कहा– अपने दम पर। जैसे ही कागज ने अकड़ कर कहा अपने दम पर और तभी हवा का एक दूसरा झोंका आया और कागज को उड़ा ले गया। अगले ही पल वह कागज नाली में गिरकर गल– सड़ गया। पुण्य की अनुकूल वायु का वेग आता है तो हमें शिखर पर पहुंचा देता है और पाप का झोंका आता है तो रसातल पहुंचा देता है।

अपनों से अपनी बात

प्यार बढ़ाओं

सब धर्मों की एक ही बात,
प्यार बढ़ाओ सबके साथ।

बहनों और भाइयों, ये ऊपर का काव्य तो बहुत ही उत्तम है। यहाँ धर्म का आशय उपासना पद्धति से है और उपासना पद्धति में धर्म के मूल स्वरूप को स्थान दिया गया। दया, प्रेम, करुणा, अक्रोध, क्षमादान, विद्या, बुद्धि, इन्द्रिय निग्रह, तो हर उपासना पद्धति के प्रति अपने को आदर रखना चाहिए। किसी को कोई उपासना पद्धति प्यारी है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि यह सर्वश्रेष्ठ जीवन जीने की कला है। जीवन कैसे जीया जाये।

आपके– हमारे देह देवालय का भी अपना धर्म है। कितना सामंजस्य है हमारे लीवर में, किडनी में, हमारे आमाशय में, फेफड़ों में। अपने दिल और दिमाग दोनों को जितना समीप लाकर, मिलाकर कार्य करेंगे, काम उतना ही अच्छा होगा। कहते हैं दिल नहीं मानता या दिल बहुत काम करने को करता है या मेरा दिमाग तो बहुत काम करने को करता है या मेरा

दिमाग तो बहुत बढ़िया काम करता है। अपने दिमाग के अवचेतन मन में आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, आकर्षण शक्ति बढ़ावें, ये आप बढ़ा सकते हैं। मेरी यह पंक्तियाँ सफल हो जायेंगी, नारायण सेवा धन्य–धन्य हो जायेगी। ऐसा हम कोई कार्य ही नहीं करें, जिससे हमें नीचा देखना पड़े। अच्छे कार्य करने वाले को डर नहीं होता, अच्छे कार्य करने वाले को चिंता भी नहीं होती। हाँ महाराज, तनाव भी नहीं आता। ये बातें प्रयोग करके ही आपको बोल रहा हूँ।

मैंने तो बचपन में ही पढ़ लिया था, गुरुजी पहले स्वयं गुड़ खाते थे तो बच्चे का गुड़ छुड़ाने के लिए माता को कहा कि आप एक महीने बाद आना। माताजी, मैं खुद भी पहले गुड़ बहुत खाता था तो बच्चे को गुड़ खाने से मना कैसे करूँ?

आपश्री सब धर्मों का आदर करें क्योंकि जो आपसे मिल रहे हैं, उनकी उपासना पद्धति आपसे अलग हो सकती है, लेकिन मनुष्य तो वो भी हैं ना, कोई पशु तो आपसे आकर मिलेगा नहीं। तो अपने को इन पंक्तियों का जीवन में प्रयोग कैसे करना है? कहते हैं ना लाभ क्या होगा? लाभ यह होगा कि जब तनाव मिटेगा तो अपना शरीर अच्छा होगा, देह देवालय अच्छा रहेगा। दूसरा स्टेशन जवानी का, यह गृहस्थाश्रम है महाराज। ऐसा है बाबूजी, इसी दुनिया में हर तरह के लोग हैं। आपको ऐसे नेतृत्व देना है, आपके परिवार को साथ लेकर चलिए, समाज को साथ लेकर चलिए। समाज की कुरीतियाँ मिटाने के लिए आप में ऐसी आकर्षण शक्ति पैदा होनी चाहिए कि समाज आपकी बात मान ले।

–कैलाश 'मानव'

ज्ञान आचरण में हो

कहते हैं कि सदैव प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है। आपके चेहरे पर प्रसन्नता के भाव आते हैं जब कैमरा सामने आता है।

आपका चेहरा खिल–खिलाता है जब आप सेल्फी लेते हैं, आप के चेहरे से उदासी कब गायब होती है? कोई फोटो खींचता है। ऐसा होता है ना? होता है या नहीं होता है? वो छोटी सी खुशी। कोई भी चुटकला सुना दें तो आप हँस जाते हैं। आपको अच्छी कहानी सुना दे तो आप हँस जाते हैं, कोई बहुरूपिया पचासों तरह के सर्कस में नाटक करे तो आपके चेहरे पर प्रसन्नता के भाव आ जाते हैं। और कुछ ही क्षणों में वह बहुरूपिया चला जाये, वो चुटकले सुनाने वाला चला जाये, वो फील्स नहीं हो आपके सामने, कैमरा नहीं हो आपके सामने, आपकी कुछ क्षण की खुशी, कुछ ही क्षणों बाद खत्म हो जाती है। ये आपका चेहरा ऐसे हो जाता है– उदास, लटका हुआ, समझ रहे, बात आप?

हर क्षण खुश रहना, भले फेस चमक रहा हो या नहीं चमक रहा हो, हर क्षण खुश रहना। भले ही चुटकला सुना रहा हो, या नहीं सुना रहा हो, हर क्षण प्रेम से, स्नेह से, आत्मीयता से लबरेज रहना, हर क्षण प्रसन्नता के भाव रखना, ये सब तब संभव होता है जब व्यक्ति सजग हो, अच्छा–अच्छा ज्ञान ज्ञानी पुरुषों के काम नहीं आता। जब परीक्षा आती है तो अच्छे–अच्छे ज्ञानी पुरुष जो गीता ज्ञान सुनाते हैं, उनकी पत्नी चली जाये तो धार मार–मार कर रोते है। अच्छे–अच्छे ज्ञानी पुरुष जो बहुत सारी ज्ञान की बातें करते है, और जब उन पर बीतती है, तो वो ज्ञान भूल जाते है। उस बाधाओं से निकलने के लिए और उपाय करते। ज्ञान सुना सब ने है, लेकिन आचरण में उतारा किसने है? वो इम्पोरटेन्ट है। जो ज्ञान आचरण में नहीं, वह ज्ञान किसी कार्य का नहीं?

वो सब व्यर्थ है, मैं भी बहुत सारी किताबें पढ़ के, बहुत सारा ज्ञान लेकर, बहुत सारे अध्ययन करके, मैं आपको सब सुना दूंगा। लेकिन अगर मेरे में नहीं है, तो उस ज्ञान का महत्व मेरे लिए कदाचित बिल्कुल नहीं है। मैं सेवा की बात करता हूँ, सेवा से मिलने वाले फायदों की बात करता हूँ, परोपकार की बात करता हूँ तो केवल इसलिए कि मैंने वो जीवन जीया है, नहीं तो मैं नहीं बोल सकता।

— सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश को एक विवाह समारोह में सम्मिलित होने अमृतसर जाना पड़ा। पीछे से कुछ यात्री उदयपुर घूमने आये। उन्होंने नारायण सेवा का नाम सुना था।

प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक डॉ. आर. के. अग्रवाल का नाम प्रारम्भ से ही नारायण सेवा से जुड़ा था। यात्रियों ने पूछताछ की तो उन्हें डॉ. अग्रवाल का नाम ही बताया। सभी डॉ. अग्रवाल के पास गये तो वे उन सब को लेकर कैलाश के घर पहुँचे। कैलाश की अनुपस्थिति में कमला ने ही उनका स्वागत किया।

कुछ देर बातचीत के बाद कमला उन्हें सेवा धाम की जमीन पर ले गई और कहा कि अभी कुछ अनाथ बच्चे उसके घर पर ही रहते हैं, उनके लिये यहां एक कमरा बनवाने की इच्छा है, आप लोगों का योगदान मिल जाये तो इसकी नींव पड़ जायेगी।

आगन्तुकों ने कहा कि इतना पैसा तो वे दे नहीं सकते – दो–चार हजार रु. जरूर दे सकते हैं। कमला ने कहा कि हमारी इच्छा तो और भी अनाथ बच्चों को लाकर यहां रखने की है इसलिये आप इस बारे में पुनर्विचार करना।

कमला की बात को गंभीरता से लेते हुए उन्होंने कहा कि वे नाथद्वारा जा रहे हैं, वहां उनका 10 दिन रहने का कार्यक्रम है, इस बीच कैलाश अगर लौट आये तो उनसे कहना कि वो हमसे आकर मिल ले। कैलाश के लौटते ही कमला ने सारी बात बताई तो दोनों पति–पत्नी नाथद्वारा पहुँच गए।

कैलाश ने विस्तार से उन्हें अपनी गतिविधियों और सेवा कार्यों से अवगत कराया। वह अपने साथ शिविरों के चित्र भी ले गया था, वे भी बताये तो सभी प्रभावित हो गये। उनका एक पारिवारिक ट्रस्ट चलता था, उसमें से 60 हजार रु. वे देने को तैयार हो गये। उन्होंने कहा कि महीने भर में यह राशि वे भिजवा देंगे जिससे अनाथों हेतु 3 कमरे तो बन ही जायेंगे। मुम्बई के रामदेव मूंदड़ा भी सेवा के कार्यों से प्रभावित हो गये। उन्होंने 20 हजार रु. अपने पिता के नाम दिये तो संस्था की जमीन पर पहले कमरे का निर्माण हो गया।

अंश–147

सम्पादकीय

खुशियां मन के पुलक की अभिव्यक्ति होती हैं। जब हमारा मन पुलकित होता है तो वह प्रसन्नता के माध्यम से अपने को व्यक्त करता है। खुशी के समय चिंता, शोक, उदासी, भय आदि निषेधात्मक भावों का सर्वथा लोप हो जाता है। इन निषेधी विचारों की अनुपस्थिति ही सदमन का निर्माण करती है। अतः खुशी में झूमता मनुष्य प्रकृति व परमात्मा के सन्निकट होता है। खुशियां अंतस में उपजती है लेकिन कारण बाहरी भी हो सकते हैं। सामान्यतः मनवांछित वस्तु प्राप्त होने, मनचाहा कार्य होने या अनायास सफलता की प्राप्ति से खुशी छलक उठती है। इस समय व्यक्ति में उदारता का समावेश हो जाता है। तथा वह द्वेषरहित भावों में जीने लगता है, अतः खुशी एक प्रकार से भगवत्ता का ही प्रतिबिम्ब है। मानव जब खुश होता है तो वह देने को तत्पर होता है। वह खुशियों के लिए सबकुछ लुटा देना चाहता है, वह मानवता की शिखर सोच में जीने लगता है। अतः खुशी को मनुष्य का उत्थान भी कहा जा सकता है। व्यर्थ की चिंता त्यागें, खुश रहें।

कुछ काव्यमय

स्वारथ परमारथ बने,
हो यह पूरी साध।
जीवन सद्गति पा सके,
तभी चले निर्बाध।।
ईश्वर ने हमको दिया,
नर तन बड़ा अमोल।
सद्कर्मों की गंध को,
दें दुनियां में घोल।।
यह तन साधन धर्म का,
कर लें स्व कल्याण।
चेतें या सोतें रहें,
नहीं रुकेंगे प्राण।।
शरीर शुचिता खूब की,
मन भी करलें शुद्ध।
तभी और केवल तभी,
बन पायेंगे बुद्ध।।
मन के भीतर शुद्धता,
तभी मिले भगवान।
परमारथ भी है सधे,
मुक्ति भी आसान।।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

पाप–पुण्य

एक बार कागज का एक टुकड़ा हवा के वेग से उड़ा और पर्वत के शिखर पर जा पहुंचा। यहां कैसे पधारे? कागज ने कहा– अपने दम पर। जैसे ही कागज ने अकड़ कर कहा अपने दम पर और तभी हवा का एक दूसरा झोंका आया और कागज को उड़ा ले गया। अगले ही पल वह कागज नाली में गिरकर गल– सड़ गया। पुण्य की अनुकूल वायु का वेग आता है तो हमें शिखर पर पहुंचा देता है और पाप का झोंका आता है तो रसातल पहुंचा देता है।

अपनों से अपनी बात

प्यार बढ़ाओं

सब धर्मों की एक ही बात,
प्यार बढ़ाओ सबके साथ।

बहनों और भाइयों, ये ऊपर का काव्य तो बहुत ही उत्तम है। यहाँ धर्म का आशय उपासना पद्धति से है और उपासना पद्धति में धर्म के मूल स्वरूप को स्थान दिया गया। दया, प्रेम, करुणा, अक्रोध, क्षमादान, विद्या, बुद्धि, इन्द्रिय निग्रह, तो हर उपासना पद्धति के प्रति अपने को आदर रखना चाहिए। किसी को कोई उपासना पद्धति प्यारी है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि यह सर्वश्रेष्ठ जीवन जीने की कला है। जीवन कैसे जीया जाये।

आपके– हमारे देह देवालय का भी अपना धर्म है। कितना सामंजस्य है हमारे लीवर में, किडनी में, हमारे आमाशय में, फेफड़ों में। अपने दिल और दिमाग दोनों को जितना समीप लाकर, मिलाकर कार्य करेंगे, काम उतना ही अच्छा होगा। कहते हैं दिल नहीं मानता या दिल बहुत काम करने को करता है या मेरा दिमाग तो बहुत काम करने को करता है या मेरा

दिमाग तो बहुत बढ़िया काम करता है। अपने दिमाग के अवचेतन मन में आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, आकर्षण शक्ति बढ़ावें, ये आप बढ़ा सकते हैं। मेरी यह पंक्तियाँ सफल हो जायेंगी, नारायण सेवा धन्य–धन्य हो जायेगी। ऐसा हम कोई कार्य ही नहीं करें, जिससे हमें नीचा देखना पड़े। अच्छे कार्य करने वाले को डर नहीं होता, अच्छे कार्य करने वाले को चिंता भी नहीं होती। हाँ महाराज, तनाव भी नहीं आता। ये बातें प्रयोग करके ही आपको बोल रहा हूँ।

मैंने तो बचपन में ही पढ़ लिया था, गुरुजी पहले स्वयं गुड़ खाते थे तो बच्चे का गुड़ छुड़ाने के लिए माता को कहा कि आप एक महीने बाद आना। माताजी, मैं खुद भी पहले गुड़ बहुत खाता था तो बच्चे को गुड़ खाने से मना कैसे करूँ?

आपश्री सब धर्मों का आदर करें क्योंकि जो आपसे मिल रहे हैं, उनकी उपासना पद्धति आपसे अलग हो सकती है, लेकिन मनुष्य तो वो भी हैं ना, कोई पशु तो आपसे आकर मिलेगा नहीं। तो अपने को इन पंक्तियों का जीवन में प्रयोग कैसे करना है? कहते हैं ना लाभ क्या होगा? लाभ यह होगा कि जब तनाव मिटेगा तो अपना शरीर अच्छा होगा, देह देवालय अच्छा रहेगा। दूसरा स्टेशन जवानी का, यह गृहस्थाश्रम है महाराज। ऐसा है बाबूजी, इसी दुनिया में हर तरह के लोग हैं। आपको ऐसे नेतृत्व देना है, आपके परिवार को साथ लेकर चलिए, समाज को साथ लेकर चलिए। समाज की कुरीतियाँ मिटाने के लिए आप में ऐसी आकर्षण शक्ति पैदा होनी चाहिए कि समाज आपकी बात मान ले।

–कैलाश 'मानव'

ज्ञान आचरण में हो

कहते हैं कि सदैव प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है। आपके चेहरे पर प्रसन्नता के भाव आते हैं जब कैमरा सामने आता है।

आपका चेहरा खिल–खिलाता है जब आप सेल्फी लेते हैं, आप के चेहरे से उदासी कब गायब होती है? कोई फोटो खींचता है। ऐसा होता है ना? होता है या नहीं होता है? वो छोटी सी खुशी। कोई भी चुटकला सुना दें तो आप हँस जाते हैं। आपको अच्छी कहानी सुना दे तो आप हँस जाते हैं, कोई बहुरूपिया पचासों तरह के सर्कस में नाटक करे तो आपके चेहरे पर प्रसन्नता के भाव आ जाते हैं। और कुछ ही क्षणों में वह बहुरूपिया चला जाये, वो चुटकले सुनाने वाला चला जाये, वो फील्स नहीं हो आपके सामने, कैमरा नहीं हो आपके सामने, आपकी कुछ क्षण की खुशी, कुछ ही क्षणों बाद खत्म हो जाती है। ये आपका चेहरा ऐसे हो जाता है– उदास, लटका हुआ, समझ रहे, बात आप?

हर क्षण खुश रहना, भले फेस चमक रहा हो या नहीं चमक रहा हो, हर क्षण खुश रहना। भले ही चुटकला सुना रहा हो, या नहीं सुना रहा हो, हर क्षण प्रेम से, स्नेह से, आत्मीयता से लबरेज रहना, हर क्षण प्रसन्नता के भाव रखना, ये सब तब संभव होता है जब व्यक्ति सजग हो, अच्छा–अच्छा ज्ञान ज्ञानी पुरुषों के काम नहीं आता। जब परीक्षा आती है तो अच्छे–अच्छे ज्ञानी पुरुष जो गीता ज्ञान सुनाते हैं, उनकी पत्नी चली जाये तो धार मार–मार कर रोते है। अच्छे–अच्छे ज्ञानी पुरुष जो बहुत सारी ज्ञान की बातें करते है, और जब उन पर बीतती है, तो वो ज्ञान भूल जाते है। उस बाधाओं से निकलने के लिए और उपाय करते। ज्ञान सुना सब ने है, लेकिन आचरण में उतारा किसने है? वो इम्पोरटेन्ट है। जो ज्ञान आचरण में नहीं, वह ज्ञान किसी कार्य का नहीं?

वो सब व्यर्थ है, मैं भी बहुत सारी किताबें पढ़ के, बहुत सारा ज्ञान लेकर, बहुत सारे अध्ययन करके, मैं आपको सब सुना दूंगा। लेकिन अगर मेरे में नहीं है, तो उस ज्ञान का महत्व मेरे लिए कदाचित बिल्कुल नहीं है। मैं सेवा की बात करता हूँ, सेवा से मिलने वाले फायदों की बात करता हूँ, परोपकार की बात करता हूँ तो केवल इसलिए कि मैंने वो जीवन जीया है, नहीं तो मैं नहीं बोल सकता।

— सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश को एक विवाह समारोह में सम्मिलित होने अमृतसर जाना पड़ा। पीछे से कुछ यात्री उदयपुर घूमने आये। उन्होंने नारायण सेवा का नाम सुना था।

प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक डॉ. आर. के. अग्रवाल का नाम प्रारम्भ से ही नारायण सेवा से जुड़ा था। यात्रियों ने पूछताछ की तो उन्हें डॉ. अग्रवाल का नाम ही बताया। सभी डॉ. अग्रवाल के पास गये तो वे उन सब को लेकर कैलाश के घर पहुँचे। कैलाश की अनुपस्थिति में कमला ने ही उनका स्वागत किया।

कुछ देर बातचीत के बाद कमला उन्हें सेवा धाम की जमीन पर ले गई और कहा कि अभी कुछ अनाथ बच्चे उसके घर पर ही रहते हैं, उनके लिये यहां एक कमरा बनवाने की इच्छा है, आप लोगों का योगदान मिल जाये तो इसकी नींव पड़ जायेगी।

आगन्तुकों ने कहा कि इतना पैसा तो वे दे नहीं सकते – दो–चार हजार रु. जरूर दे सकते हैं। कमला ने कहा कि हमारी इच्छा तो और भी अनाथ बच्चों को लाकर यहां रखने की है इसलिये आप इस बारे में पुनर्विचार करना।

कमला की बात को गंभीरता से लेते हुए उन्होंने कहा कि वे नाथद्वारा जा रहे हैं, वहां उनका 10 दिन रहने का कार्यक्रम है, इस बीच कैलाश अगर लौट आये तो उनसे कहना कि वो हमसे आकर मिल ले। कैलाश के लौटते ही कमला ने सारी बात बताई तो दोनों पति–पत्नी नाथद्वारा पहुँच गए।

कैलाश ने विस्तार से उन्हें अपनी गतिविधियों और सेवा कार्यों से अवगत कराया। वह अपने साथ शिविरों के चित्र भी ले गया था, वे भी बताये तो सभी प्रभावित हो गये। उनका एक पारिवारिक ट्रस्ट चलता था, उसमें से 60 हजार रु. वे देने को तैयार हो गये। उन्होंने कहा कि महीने भर में यह राशि वे भिजवा देंगे जिससे अनाथों हेतु 3 कमरे तो बन ही जायेंगे। मुम्बई के रामदेव मूंदड़ा भी सेवा के कार्यों से प्रभावित हो गये। उन्होंने 20 हजार रु. अपने पिता के नाम दिये तो संस्था की जमीन पर पहले कमरे का निर्माण हो गया।

अंश–147